7 दान का हिसाब

एक था राजा। राजा जी लकदक कपड़े पहनकर यूँ तो हज़ारों रुपए खर्च करते रहते थे, पर दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

राजसभा में एक से एक नामी लोग आते रहते थे, लेकिन गरीब, दुखी, विद्वान, सज्जन इनमें से कोई भी नहीं आता था क्योंकि वहाँ पर इनका बिल्कुल सत्कार नहीं होता था।

एक बार उस देश में अकाल पड़ गया। पूर्वी सीमा के लोग भूखे-प्यासे मरने लगे। राजा के पास खबर आई। वे बोले, ''यह तो भगवान की मार है, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है।''

लोगों ने कहा, "महाराज, राजभंडार से हमारी सहायता करने की कृपा करें, जिससे हम लोग दूसरे देशों से अनाज खरीदकर अपनी जान बचा सकें।"

राजा ने कहा, "आज तुम लोग अकाल से पीड़ित हो, कल पता चलेगा, कहीं भूकंप आया है। परसों सुनूँगा, कहीं के लोग बड़े गरीब हैं, दो वक्त की रोटी नहीं जुटती। इस तरह सभी की सहायता करते-करते जब राजभंडार खत्म हो जाएगा तब खुद मैं ही दिवालिया हो जाऊँगा।"

यह सुनकर सभी निराश होकर लौट गए।

इधर अकाल का प्रकोप फैलता ही जा रहा था। न जाने रोज़ कितने ही लोग भूख से मरने लगे। लोग फिर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजसभा में गुहार लगाई, "दुहाई महाराज! आपसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते, सिर्फ़ दस हज़ार रुपए हमें दे दें तो हम आधा पेट खाकर भी ज़िंदा रह जाएँगे।"

राजा ने कहा, "दस हज़ार रुपए भी क्या तुम्हें बहुत कम लग रहे हैं? और उतने कष्ट से जीवित रहकर लाभ ही क्या है!"

एक व्यक्ति ने कहा, "भगवान की कृपा से लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो। उसमें से एक-आध लोटा ले लेने से महाराज का क्या नुकसान हो जाएगा!"

राजा ने कहा, "राजकोष में अधिक धन है तो क्या उसे दोनों हाथों से लुटा दूँ?"

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "महल में प्रतिदिन हज़ारों रुपए इन सुगंधित वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट में खर्च होते हैं। यदि इन रुपयों में से ही थोड़ा-सा धन ज़रूरतमंदों को मिल जाए तो उन दुखियों की जान बच जाएगी।"

यह सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोला, "खुद भिखारी होकर मुझे उपदेश दे रहे हो? मेरा रुपया है, मैं चाहे उसे उबालकर खाऊँ चाहे तलकर! मेरी मर्ज़ी। तुम अगर इसी तरह बकवास करोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। इसलिए इसी वक्त तुम चुपचाप खिसक जाओ।''

राजा का क्रोध देखकर लोग वहाँ से चले गए।

राजा हँसते हुए बोला, "छोटे मुँह बड़ी बात! अगर सौ-दो सौ रुपए होते तो एक बार सोच भी सकता था। पहरेदारों की खुराक दो-चार दिन कम कर देता और यह रकम पूरी भी हो जाती। मगर सौ-दो सौ से इन लोगों का पेट नहीं भरेगा, एकदम दस हज़ार माँग बैठे। छोटे लोगों के कारण नाक में दम हो गया है।"
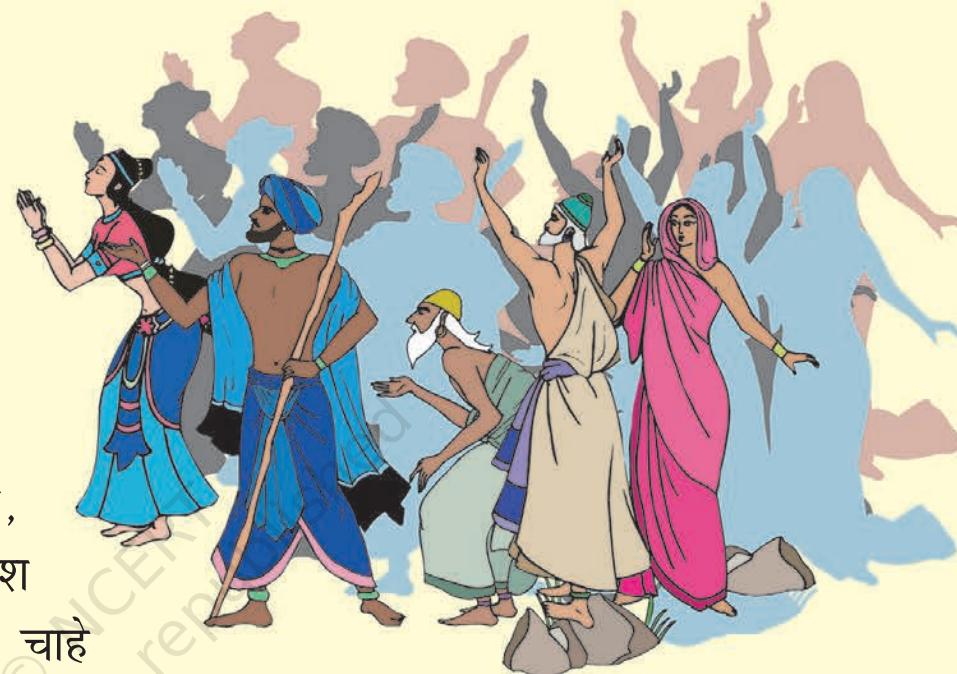
यह सुनकर वहाँ उपस्थित लोग हाँ–हूँ कह कर रह गए। मगर मन ही मन उन्होंने भी सोचा, "राजा ने यह ठीक नहीं किया। ज़रूरतमंदों की सहायता करना तो राजा का कर्त्तव्य है।"

दो दिन बाद न जाने कहाँ से एक बूढ़ा संन्यासी राजसभा में आया। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "दाता कर्ण महाराज! बड़ी दूर से आपकी प्रसिद्धि सुनकर आया हूँ। संन्यासी की इच्छा भी पूरी कर दें।"

अपनी प्रशंसा सुनकर राजा बोला, "ज़रा पता तो चले तुम्हें क्या चाहिए? यदि थोड़ा कम माँगो तो शायद मिल भी जाए।"

संन्यासी ने कहा, "मैं तो संन्यासी हूँ। मैं अधिक धन का क्या करूँगा! मैं राजकोष से बीस दिन तक बहुत मामूली भिक्षा प्रतिदिन लेना चाहता हूँ। मेरा भिक्षा लेने का नियम इस प्रकार है, मैं पहले दिन जो लेता हूँ, दूसरे दिन उसका दुगुना, फिर तीसरे दिन उसका दुगुना, फिर चौथे दिन तीसरे दिन का दुगुना। इसी तरह से प्रतिदिन दुगुना लेता जाता हूँ। भिक्षा लेने का मेरा यही तरीका है।"

राजा बोला, "तरीका तो समझ गया। मगर पहले दिन कितना लेंगे, यही असली बात है। दो–चार रुपयों से पेट भर जाए तो अच्छी बात है, मगर एकदम से बीस–पचास माँगने लगे, तब तो बीस दिन में काफ़ी बड़ी रकम हो जाएगी।"

संन्यासी ने हँसते हुए कहा, "महाराज, मैं लोभी नहीं हूँ। आज मुझे एक रुपया दीजिए, फिर बीस दिन तक दुगुने करके देते रहने का हुक्म दे दीजिए।"

यह सुनकर राजा, मंत्री और दरबारी सभी की जान में जान आई। राजा ने हुक्म दे दिया कि संन्यासी के कहे अनुसार बीस दिन तक राजकोष से उन्हें भिक्षा दी जाती रहे।

संन्यासी राजा की जय-जयकार करते हुए घर लौट गए।

राजा के आदेश के अनुसार राजभंडारी प्रतिदिन हिसाब करके संन्यासी को भिक्षा देने लगा। इस तरह दो दिन बीते, दस दिन बीते। दो सप्ताह तक भिक्षा देने के बाद भंडारी ने हिसाब करके देखा कि दान में काफ़ी धन निकला जा रहा है। यह देखकर उन्हें उलझन महसूस होने लगी। महाराज तो कभी किसी को इतना दान नहीं देते थे। उसने यह बात मंत्री को बताई।

मंत्री ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई, यह बात तो पहले ध्यान में ही नहीं आई थी। मगर अब कोई उपाय भी नहीं है। महाराज का हुक्म बदला नहीं जा सकता।"

इसके बाद फिर कुछ दिन बीते। भंडारी फिर हड़बड़ाता हुआ मंत्री के पास पूरा हिसाब लेकर आ गया। हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

वह अपना पसीना पोंछकर, सिर खुजलाकर, दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बोला, "यह क्या कह रहे हो! अभी से इतना धन चला गया है! तो फिर बीस दिनों के अंत में कितने रुपए होंगे?

भंडारी बोला, "जी, पूरा हिसाब तो नहीं किया है।"

मंत्री ने कहा, "तो तुरंत बैठकर, अभी पूरा हिसाब करो।"

भंडारी हिसाब करने बैठ गया। मंत्री महाशय अपने माथे पर बर्फ़ की पट्टी लगाकर तेज़ी से पंखा झलवाने लगे।

कुछ ही देर में भंडारी ने पूरा हिसाब कर लिया।

मंत्री ने पूछा, "कुल मिलाकर कितना हुआ?"

भंडारी ने हाथ जोड़कर कहा, "जी, दस लाख अड़तालीस हज़ार पाँच सौ पिचहत्तर रुपए।"

मंत्री गुस्से में बोला, "मज़ाक कर रहे हो?" यदि संन्यासी को इतने रुपए दे दिए तब तो राजकोष खाली हो जाएगा।"

भंडारी ने कहा, "मज़ाक क्यों करूँगा? आप ही हिसाब देख लीजिए।"

यह कहकर उसने हिसाब का कागज़ मंत्री जी को दे दिया। हिसाब देखकर मंत्री जी को चक्कर आ गया। सभी उन्हें सँभालकर बड़ी मुश्किलों से राजा के पास ले गए।

राजा ने पूछा, "क्या बात है?"

मंत्री बोले, "महाराज, राजकोष खाली होने जा रहा है।"

राजा ने पूछा, "वह कैसे?"

मंत्री बोले, "महाराज, संन्यासी को आपने भिक्षा देने का हुक्म दिया है।

दान का हिसाब

पहला दिन	1 रुपया
दूसरा दिन	2 रुपए
तीसरा दिन	4 रुपए
चौथा दिन	8 रुपए
पाँचवाँ दिन	16 रुपए
छठा दिन	32 रुपए
सातवाँ दिन	64 रुपए
आठवाँ दिन	128 रुपए
नवाँ दिन	256 रुपए
दसवाँ दिन	512 रुपए
ग्यारहवाँ दिन	1024 रुपए
बारहवाँ दिन	2048 रुपए
तेरहवाँ दिन	4096 रुपए
चौदहवाँ दिन	8192 रुपए
पंद्रहवाँ दिन	16384 रुपए
सोलहवाँ दिन	32768 रुपए
सत्रहवाँ दिन	65536 रुपए
अठारहवाँ दिन	131072 रुपए
उन्नीसवाँ दिन	262144 रुपए
बीसवाँ दिन	524288 रुपए
कुल	**1048575 रुपए**

मगर अब पता चला है कि उन्होंने इस तरह राजकोष से करीब दस लाख रुपए झटकने का उपाय कर लिया है।"

राजा ने गुस्से से कहा, "मैंने इतने रुपए देने का आदेश तो नहीं दिया था। फिर इतने रुपए क्यों दिए जा रहे हैं? भंडारी को बुलाओ।"

मंत्री ने कहा, "जी सब कुछ आपके हुक्म के अनुसार ही हुआ है। आप खुद ही दान का हिसाब देख लीजिए।"

राजा ने उसे एक बार देखा, दो बार देखा, इसके बाद वह बेहोश हो गया। काफ़ी कोशिशों के बाद उनके होश में आ जाने पर लोग संन्यासी को बुलाने दौड़े।

संन्यासी के आते ही राजा रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला, "दुहाई है संन्यासी महाराज, मुझे इस तरह जान-माल से मत मारिए। जैसे भी हो एक समझौता करके मुझे वचन से मुक्त कर दीजिए।

अगर आपको बीस दिन तक भिक्षा दी गई तो राजकोष खाली हो जाएगा। फिर राज–काज कैसे चलेगा!"

संन्यासी ने गंभीर होकर कहा, "इस राज्य में लोग अकाल से मर रहे हैं। मुझे उनके लिए केवल पचास हज़ार रुपए चाहिए। वह रुपया मिलते ही मैं समझूँगा मुझे मेरी पूरी भिक्षा मिल गई है।"

राजा ने कहा, "परंतु उस दिन एक आदमी ने मुझसे कहा था कि लोगों के लिए दस हज़ार रुपए ही बहुत होंगे।"

संन्यासी ने कहा, "मगर आज मैं कहता हूँ कि पचास हज़ार से एक पैसा कम नहीं लूँगा।"

राजा गिड़गिड़ाया, मंत्री गिड़गिड़ाए, सभी गिड़गिड़ाए। मगर संन्यासी अपने वचन पर डटा रहा। आखिरकार लाचार होकर राजकोष से पचास हज़ार रुपए संन्यासी को देने के बाद ही राजा की जान बची।

पूरे देश में खबर फैल गई कि अकाल के कारण राजकोष से पचास हज़ार रुपए राहत में दिए गए हैं। सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

सुकुमार राय

कहानी से

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था?

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन वे राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे?

(ग) राजसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे?

(घ) संन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली?

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

अंदाज़ अपना-अपना

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगे?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो।

साथी हाथ बढ़ाना

कभी-कभी कुछ इलाकों में बारिश बिल्कुल भी नहीं होती। नदी-नाले, तालाब सब सूख जाते हैं। फ़सलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु-पक्षी, जानवर, लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकते हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगे?

ज़िम्मेदारी अपनी-अपनी

तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ होंगी?

(क) मंत्री

(ख) भंडारी

कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि–

(क) कर्ण कौन थे?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है?

(ग) दान क्या होता है?

(घ) किन-किन कारणों से लोग दान करते हैं?

कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था?

- तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है? पता करके लिखो।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे?

- तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या-क्या काम करवाना चाहते हो?

कैसा राजा!

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था।
तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत?
अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन-किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था?

पूर्व और पूर्व

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) 'पूर्व' शब्द के दो अर्थ हैं

पूर्व–एक दिशा

पूर्व–पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो–दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य बनाओ।

जल ....

....

मन ....

....

मगर ....

....

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं।

तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या–क्या है? तालिका भरो–

दिशा	घर के पास	स्कूल के पास
पूर्व		
पश्चिम		
उत्तर		
दक्षिण		